प्रश्न - जैव विविधता क्या है? इसके महत्व एवं प्रभावित करने वाले कारक को बताएँ।

उत्तर - जीवन में विविधता ही जैव विविधता है।

या

किसी क्षेत्र के पेड़-पौधों, जीव, जन्तुओं में पाई जाने वाली विविधता ही उस क्षेत्र की जैव विविधता है।

भारत विश्व के विशाल जैव विविधता वाले देशों में से एक है यहाँ विश्व के कुल भूमि क्षेत्र का केवल 2.4% है जबकि जैव विविधता लगभग 8% पाई जाती है।

जैव विविधता के प्रकार

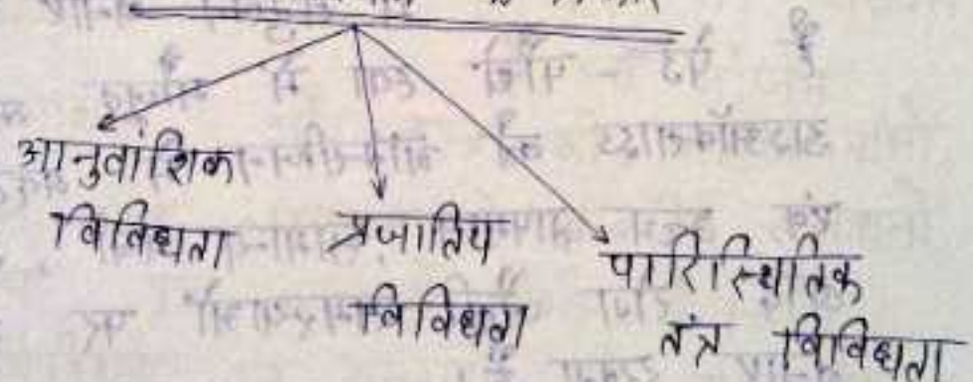

(i) आनुवांशिक विविधता

जीन के स्तर पर संरचना में विविधता होती है तो उसे आनुवांशिक विविधता कहते है।

(ii) प्रजातीय विविधता

किसी क्षेत्र में पाई जाने वाली विभिन्न प्रकार की प्रजातियों में विविधता, प्रजातीय विविधता कहलाती है।

(iii) पारिस्थितिक तंत्र विविधता

किसी खास पारिस्थितिक तंत्र में पाई जाने वाली विविधता को पारिस्थितिक विविधता कहते है।

जैव विविधता का महत्व

(i) पर्यावरण संतुलन – जैव विविधता पर्यावरण में संतुलन बनाए रखता है पेड़-पौधे हवा में मौजूद कार्बन डाइऑक्साइड को ऑक्सीजन में बदलते है। एवं उच्च तापमान, सामान्य वर्षा, सूखा, बाढ़, रोग जैसी समस्याओं पर नियंत्रण बनाए रखता है।

(ii) पारिस्थितिय भूमिका – जैव विविधता पारिस्थितिक संतुलन एवं जीवन के लिए अनुकूल परिस्थितियों को बनाए रखने में मदद करते है।

(iii) स्थानिय अर्थव्यवस्था को बढ़ावा - प्राकृतिक सौंदर्य और जैव विविधता पर्यटकों को आकर्षित करती है जो लोगों के लिए रोजगार का सृजन करती है और स्थानिय अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देती है। इसके अलावा यह क्षेत्र बहुत सारे लुप्तप्राय और दुर्लभ प्रजातियों का निवास स्थान है।

जैव विविधता को प्रभावित करने वाले कारक निम्न है :-

(i) जनसंख्या में तीव्र वृद्धि - जनसंख्या में तीव्र वृद्धि होने से वनों की कटाई कर ऊँची - ऊँची इमारतें बनाई जा रही है एंव संसाधनों का अत्याधिक दोहन किया जा रहा है।

(ii) कृषि क्षेत्र का विस्तार - कृषि करने के लिए बड़े पैमाने पर वनों की कटाई कर कृषि भूमि प्राप्त की जा रही है जिससे जैव - विविधता का आवास - विनाश हो रहा है।

(iii) जलवायु परिवर्तन - मानवीय गतिविधियों द्वारा प्रदूषण और जलवायु परिवर्तन से पर्यावरण खराब

होने एवं तापमान, वर्षा के बदलते प्रतिरूप तथा समुद्र स्तर में असंतुलन से जैव विविधता प्रभावित हुई है।

(iv) प्राकृतिक आपदा – प्राकृतिक आपदा जैसे – ज्वालामुखी क्रिया, भूकंप, चक्रवात, भूमि निम्नीकरण आदि द्वारा भी जैव विविधता को क्षति पहुँचती है।

(v) जीवों का अवैध व्यापार – जीवों का अवैध शिकार, अवैध वन्यजीव व्यापार, लुप्तप्राय प्रजातियों का व्यापार, वन्यजीव अपराध से जीवों की विविधता में ह्रास होता है।

(vi) रासायनिक उर्वरकों का उपयोग

कृषि कार्य में रासायनिक उर्वरकों का उपयोग करने से कई प्रकार के जीव नष्ट हो जाते हैं।

(vii) विदेशी प्रजातियों का आगमन

आक्रामक विदेशी प्रजातियाँ जैसे – जलकुंभी, यूकेलिप्टस, लैंटाना आदि प्रजातियाँ का देशी प्रजातियों के साथ प्रतिस्पर्धा करते हैं।

(viii) **ग्लोबल वार्मिंग** – ग्लोबल वार्मिंग का प्रभाव भी इस क्षेत्र को नुकसान हानि पहुँचा रहा है जिससे यहाँ की जैव विविधता प्रभावित हो रही है।

(ix) **शहरीकरण** – बढ़ते शहरीकरण के कारण भी प्राकृतिक संसाधनों का अत्यधिक दोहन हो रहा है जिससे यहाँ की जैव विविधता का प्रभावित हो रही है।

(x) **मानवीय जीवन स्तर में सुधार**

मानव विलासिता हेतु विभिन्न प्रकार की सामग्रियों का उपयोग करता है जो इन जैव विविधता वाले क्षेत्रों से प्राप्त होता है।

भारत में जैव विविधता के क्षेत्र

- (1) प. घाट
- हिमालय पर्वतीय क्षेत्र
- गंगा-ब्रह्मपुत्र का मैदान
- पूर्वोत्तर भारत
- राजस्थान का थार मरुस्थल
- अंडमान निकोबार द्वीप समूह

AnyScanner

भारत के में जैव - विविधता के प्रमुख क्षेत्र